माँ की अनमोल भूमिका

रात की अँधकार को पार करके सूरज धूम-धाम से आया। अपनी चमकती हुई रोशनी को फैलाकर सुबह की वेला का आरंभ किया। सारे पक्षी-गण मत्रभूमि का गुण-गान गाते हुए धरती का प्रशंसा करते हैं। खिड़की से बाहर देखते ही सुंदर सी एक ऊँची पहाड़ का चित्र मेरे ख्वाब में आया। अचानक ही नौकरानी मुझे नींद से जगाकर अपने हकीकत मे ला गया।

मुंबई की इस भीड़-भाड़ और चमक-धमक से मैं अब थक चुका हूँ। यहाँ ज़िंदगी बिताने से मुझे ऐसा लगता हैं कि मानो, कोई मेरे गले दबाकर जान निकालने की खोशिश में हो।

यह बचपन से ही माता-पिता मुझे छोड़-छाँडकर विदेश में अपने जीवन भौतिकवादी- से जीने के लिए गया था। फिर मुझे इस दुनिया में

लाची ही क्यों कुछ है ? ताकि मैं एक कठिन जीवन बितायूँ ? ताकि मैं एक यतीम की तरह सदा दुख से जीवन बितायूँ ?
मेरे हर सवाल को अब जवाब देने का के लोग वाले लोग भी अब मेरे साथ नही हैं। दोस्तो, तो दूर की बात जिसने मुझे यूँ किसी खिलोने के तरह कचरे में फैंनककर गया हो।
सुबह ही अपने ऑफिस टीम से फोन आया। एक महीला पोलीसकर्मी होने के नाथे, ज़िंदगी को मज़ाक-रुपी जीना अपने बस की बात नही है। इसलिए जल्दबाज़ी में नाश्ता करके, में ~~सुम्भिफोम~~ दफ्तर की ओर निकल पड़ी।
अपने गाड़ी में बैठकर सफ़र की शुरुआत की। चलते-चलते में आड़ीं गाडियों के बीच, ट्रैफिक में जाकर फँसा। इससे अच्छी शुरुआत अब नही हो सकता। सड़कें और गाडियों की इस हँसी-मज़ाक से निकालना अब मुश्किल-सा लग रहा है।

"सपनों की नगरी" जानेवाले इस मुंबई की शहर में लोग आसमान से ख्वाब और ~~क~~ पैसों ~~की~~ पैसे बनाने की बात करने के लिए आते हैं। लेकिन यहाँ कि की झुगी-बस्तीयाँ में ऐसे भी लोग हैं जो एक बार को भोजन के लिए हर दिन तड़पते हैं। झुगी-बस्तीयाँ, गरीबी, उदासी और बेबसी रुपी तसवीर ~~प~~ हमारे सामने पेश करते हैं।

यहाँ से यात्रा करते हुए में आगे ~~च~~ मंद गती से जा रहा था। ~~सब~~ मेरे आस-पास सब ठीक-ठाक चल रहा था। पर अचानक एक ऐसा क्षण आया जब पूरे दुनिया सुन-सान थे। मुझे ऐसा लगता था कि मानो पूरे ~~ब~~ आसमान धरती पर अब गिरकर सबके ~~सब~~ अंत होनेवाले थे। ~~इस~~ पल ~~भी~~ ऐसा लगता था कि ~~इस~~ हर पल भी बिना बताये, बहुत कुछ कहना ~~च~~ के लिए चाहते हैं।

अचानक मैंने गाड़ी से उतारकर सड़क की ओर चलने निकला। सब लोग, किसी एक स्थान पर निशःब्द खड़ा था। जब मैंने देखा तो एक महिला का शरीर और हड्डियाँ, सड़क पर छीन-छाँडकर फैला हुआ था। बाद में आस-पास के लोगो से पूछने से पता चला कि, अपने बच्ची को बचाने के लिए वह सड़क की ओर दौड़-रही थी जब एक बड़ी-सी गाड़ी ~~आकर~~ उस पर चढ ~~दिया~~ गया। यह परिसंभव मुझे एक सन्नाटे में आश्चर्य-चकित बना ~~दिखा~~ दिया। मेरा मन भी किसी बीरु की तरह कमज़ोर हो गया। मुझे शोक-सा लगा। उसका चेहरा कोमल और सुंदर थे। खरीब पाँच-छेह साल ही होगा वह नन्ही-सी बच्ची को। नाको को चने छबाकर जीनेवाले उस माँ को अपनी एक ही अपनापन था, वो बच्ची जिसका नाम था चाँदनी।

वह बच्ची को ना कुछ समझ पा रहा था, न कोई बताने वाले थे। वह अपने बड़ी-बड़ी आँखों से इस भीड में अपने माँ को ढूँढ रही थी पर सब लोग अजनबी-ही-अजनबी थे। चाँदनी की चेहरे ~~की~~ सारी रोशनी अब गायब हो गया। उसके चहरा अब टमाटर जैसे लाल-लाल सी हो गया। ~~उ~~ उसकी आँखो ~~में~~ डर और उलझन से झलक रहा था। ~~उ~~ ~~अपने~~ खून से समेटे हुए अपनी माँ की देहांत को देखकर उसको सब कुछ पता चला। ~~उ~~ ~~व~~ अपने आँखो से पानी की बड़ी-बड़ी बूँदें बहने लगा जैसे कि उसकी सारी दुनिया धीरे से टूटकर-टूटकर ~~जैसे~~ ~~शीशा~~ गिरने लगी हो। यह दृष्य देखकर उस गली की सारे लोगों के आँखें लाल सी हो गया। रो-रोकर मैंने ~~उ~~ चाँदनी को धीर से पकड़ लिया और अपने पुलिस गाड़ी में बिठा दिया। "~~बाबा~~ बेटी तुम भूखी हो"

मैंने धीरे से पूछा।

"नही जी। ~~मैसी~~ क्या मेरी माँ ठीक है?
वो मरा तो नही, है ना? ....
कुछ तो बोलो जी"।

इस ~~जबाब~~ ~~सवाश~~ सवाल के कोई जवाब मेरे पास नही था। इस स्थिति मैं मुझे अपने बचपन की याद आई। उसके और मेरे हाल कुछ-ना-कुछ एक जैसे ही था। इसलिए इस घटना मुझे ज़ोर से अपने दिल को काट दिया।

मेरी इस खामोश से ही उसको सब कुछ व्यक्त हुआ। कभी-कभी कुछ कहने बगैर सी खामोशी सब कह जाते है जो अक्सर शब्दों से नहीं हो पता।

उसको खाना खिलाकर मैं यात्रा शुरु किया जिसकी यात्रा की सारे मोड़ ही अब बदल चुका है।

जिस यात्रा पर मुझे अब एक नई छोटी-सी साथी ~~भी~~ है जो हमेशा अब मेरा साथ ही होगा।

मेरी ज़िंदगी से नष्ट और खोए हुए सारी रोशनी और खूशबू अब "चाँदनी" नामक मेरी बेटी ने वापस भरा दिया। उसको अच्छी और उच्च शिक्षा प्रदान करना मेरा फर्ज़ बनता है। ज़िंदगी की बुस जुस्तुजु में अब मुझे 'अपने' कहने-वाले एक नया ही बेटी मिला जिसको मैं हमेशा खूश ~~और~~, सूख और प्यार से ज़िंदगी की हर ~~हिस्से~~ कठिन हिस्सों में साथ देंगें।

~~इस~~ कि जीवन के इस मोड़ ~~पर~~ ने मुझे एक नया सबक ~~सिख सिखाया~~ सीखाया जो है "यतीम के साथी हमेशा एक यतीम ही होते है"। यह ज़िंदगी का एक ऐसा कठिन सच्चाई है जो अक्सर लोग भूल जाते है। अधूरी और भौतिकवाद रुपी इस दुनिया में अकेलापन में जीना कठिन-सी महसूस होता है। किसी की साथ देने से या प्यार बिटाने से हमारे जीवन

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 952 Participant Code: 334.

आसन और सुखदायक होते हैं।
माँ और बच्चों के बीच के प्यार पूरी खायनात
में सबसे अनमोल और श्रेष्ठ रुपी प्यार है।
माँ सबके जीवन का सर्वश्रेष्ठ ईश्वर की
समान ही है। चाहे जितने ही कठिन ~~जद्दोजहद~~
परिस्थिति हो, माँ हमेशा हमारे साथ ही
देते है। अपने हर ख्वाब, और ख्वाहिशों को
वह भलिदान करके हमारी अच्छी देखभाल
के लिए वह पूर्णनि रुपी तैयार हो
जाता है। हमारी उन्नति और भलाई ही वह
चाहते हैं जिसमें कोई कलंक नही है।
अपनी चाँदनी को भी एक माँ की तरह
अपने अनमोल प्यार देखकर मैं उसेकीव अच्छी
देखभाल करूँगा। जिंदगी की इस यात्रा
कभी नही होगा खत्तम।

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)